Vol 6 Issue 10 Nov 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor :4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 10 | November - 2016

Indian Streams Research Journal

सालम क्षेत्र में स्थित वीर स्तम्भों का सांस्कृतिक महत्व

Shailesh Bhandari
Assistant Professor – (History), Chanakya Law College, Rudrapur, US Nagar (Uttrakhand) India .

प्रस्तावना :–

वीर स्तम्भ का तात्पर्य है– विरखम्भ। इनको हीरो स्टोन्स अथवा मैमोरियल स्टोन्स भी कहा जाता है। ये पत्थर, लकड़ी अथवा धातु के ऐसे स्तम्भ हैं जिन्हें वीर पुरूषों की स्मृति में गढ़कर स्थापित किया गया। वीर स्तम्भ स्थापित करने की परम्परा वृहत्तर भारत समेत सम्पूर्ण विश्व के अनेक भागों में हजारों वर्षों से चली आ रही है। लौह युग के प्रारम्भिक चरण में महा–पाषाणकालीन संस्कृति के रचियताओं ने अपने मृतकों की स्मृति में विशाल पाषाण खण्डों को स्थापित किया। परन्तु हम इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं कि उन्होंने अपने समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों, वीर पुरूषों, परिवार के मुखिया अथवा किन व्यक्तियों के लिए ऐसे पाषाण खण्ड खड़े किये? जो भी हो इतना तो सभी मानते हैं कि महापाषाणी, संस्कृति के लाागों ने ऐसी शिलायें अपने मृतकों हेतु खड़ी की। ये महापाषाणी संस्कृति लगभग सम्पूर्ण एशिया एवं यूरोप में फैली हैं।[1]

कुमाऊँ में तीन प्रकार के स्तम्भ हैं–

1.ऐसे स्तम्भ जो मन्दिरों/देवालयों के निकट स्थापित किये गये हैं।

2.ऐसे स्तम्भ जो गांव की सीमाओं पर या मार्ग में स्थापित किये गये हैं।

3.ऐसे स्तम्भ जो खुले मैदानों अथवा पहाड़ की चोटियों में वीर पुरूषों की याद में स्थापित किये गये हैं।[2]

सालम क्षेत्र में स्थिति प्रमुख वीर स्तम्भ निम्न हैं–

1)भानचिलाव मंदिर (सेरी), झालडुंगरा, अल्मोड़ा–

प्रायः चार सौ वर्ष पहले की बात रही होगी। झालडुगरा गांव में कैलढूंगा के पास चिलवाल नामक व्यक्ति का परिवार रहता था। गांव के अन्दर चिलावपाख, चिलाखेत आदि इस गांव में पूर्व में चिलवाल के रहने की पुष्टि करते हैं। जनश्रुति के अनुसार चिलवाल काफी ठाट–वाट से रहता था। उसे घुड़सवारी का काफी शौक था। चिलवाल की हिम्मत सिंह धौनी नामक एक व्यक्ति से दुश्मनी हो गयी और वह दुश्मनी इतनी बढ़ गयी है कि दोनों एक दूसरे को जान से मारने पर उतारू हो गये। चिलवाल व हिम्मत धौनी में लड़ाई हुई और चिलवाल झालडुगरा के सेरी में मारा गया। बाद में चिलवाल के साथ वालों ने पनार नदी में हिम्मत धौनी को भी मार दिया।

झालडुगरा गांव के सेरी में चिलवाल की आत्मा की शांति के लिए मंदिर की स्थापना की गई। सेरी में बहुत बड़े पीपल वृक्ष के पास चिलवाल मंदिर हैं। यहां पर दो वीर स्तम्भ भी हैं। लोग स्थानीय भाषा में भानी आमा, भानी बूबू कहके पूजा अर्चना करते हैं। संभवतः चिलवाल का नाम, भाना से रहा होगा। वर्तमान में झालडुंगरा के निवासी बड़ी श्रद्धा से इस मंदिर में सामूहिक पूजा–अर्चना करते हैं। हरेला, बग्वाली (दिपावली), होली, बसन्त पंचमी हर पर्व तथा त्यौहारों पर यहां पर भोग लगाकर सामूहिक पूजा अर्चना की जाती है। और गांव की सुख, शान्ति व समृद्धि के लिए प्रार्थना की जाती है। इस मंदिर में दो वीर स्तम्भ हैं। इसे स्थानीय लोग भानी आमा तथा भानी बूबू का वीर स्तम्भ मानते है। यह वीर स्तम्भ कत्यूरी काल के प्रतीत होते हैं। इस मंदिर के पीछे पीपल का बड़ा वृक्ष है। मंदिर का प्रांगण काफी कम है तथा मंदिर के प्रांगण में दीवार, इस मंदिर से लगी हुई है। वास्तव में यह दो वीर स्तम्भ कत्यूरी शासन काल के प्रतीत होते हैं। इन वीर स्तम्भों में उकेरे गये चित्र स्पष्ट हैं कि यह पत्थर पनार घाटी के लाया गया होगा तथा इस पर चित्र कत्यूरी स्थापत्य कलाकारों ने उकेरे है।[3]

2) बधौरा के निकट, त्यूनरा, अल्मोड़ा–

अल्मोड़ा जिले के सालम क्षेत्र में त्यूनरा नामक गांव के तोक–बधौरा में एक कत्यूरी कालीन वीर स्तम्भ जीर्ण–क्षीर्ण अवस्था में विद्यमान है। श्री कुंवर सिंह नेगी पुत्र मोहन सिंह नेगी के अनुसार बधौरा, त्यूनरा का यह वीर स्तम्भ भूमिया देवता का कोतवाल है। त्यूनरा, अल्मोड़ा के इस वीर स्तम्भ के पास ही पीपल वृक्ष के नीचे भूमिया देवता का मंदिर है। वधौरा में इस भूमिया मंदिर के पास एक वीर स्तम्भ है तथा इसके पास में ही हरू देवता का एक मंदिर भी विद्यमान है। इस मंदिर के पास रहने

वाले श्री भवान सिंह नेगी पुत्र श्री मोहन सिंह नेगी ने बताया कि बधौरा के जंगल में पहले कत्यूरी की भूमि थी लेकिन अब वह वन विभाग का जंगल है।[4]

वीर स्तम्भ आधा ही बचा है तथा उसमें कुछ चित्र उकेरे गये दिखते हैं। श्री कुंवर सिंह जी के अनुसार बधौरा के जंगलों में कत्यूरों की भूमि थी, इसलिए यह वीर स्तम्भ भी कत्यूरों के समय का ही होगा। वधौरा, त्यूनरा के श्री कुंवर सिंह नेगी जी ने बताया कि इस धार में पहले ओखल हुआ करते थे।[5] जब तूफानी हवायें चलती थी, तो उनके साथ भूत प्रेत भी इस धार से चला करते थे। तूफानी हवाओं (बौन) तथा भूत–प्रेतों की रोकथाम के लिए इस घाट में पनार नदी तक पत्थरों के ओखल लगाये गये थे ताकि वौन तथा भूत–प्रेतों को रोका जा सके। लेकिन अब इस धार में ओखल नहीं हैं। बदलते वक्त के अनुसार ओखल भी गायब हो गये हैं और कत्यूरी शासकों की भूमि भी बंजर हो गयी है। इस वक्त कत्यूरी शासकों की भूमि वन विभाग, उत्तराखण्ड के पास है। वधौरा का वीर स्तम्भ भी आधा ही बचा है। इसका ऊपरी भाग नष्ट हो गया है। तथा नीचे का भाग कुछ बचा हैं। अतः इसे संरक्षण की आवश्यकता है।[6]

3) देवीथल के निकट, फटक्वालडुगरा, अल्मोड़ा–

अल्मोड़ा जिले के सालम क्षेत्र में फटक्वाल–डुंगरा नामक ग्राम के समीप देवीथल में दो वीर स्तम्भ पाये जाते हैं। ये वीर स्तम्भ कत्यूरी काल के हैं। इन वीर स्तम्भों में अनेक देवी देवतओं के चित्र उकेरे गये हैं। इनमें से एक वीर स्तम्भ मंदिर के पास स्थित है तथा दूसरा वीर स्तम्भ नौले के पास है। प्राचीन काल में वीर स्तम्भ धार्मिक स्थलों पर रखे जाते थे। नौले, मंदिरों तथा राजकीय स्मारकों आदि में वीर स्तम्भ ज्यादा मिले हैं। इन वीर स्तम्भों में अश्वारोही या गजरोही योद्धा के चित्र उकेरे गये हैं। अपक्षरण के कारण योद्धा के वस्त्राभूषणों का स्पष्ट अंकन दृष्टिगोचर नहीं होता है। ग्रीवा भाग साधारण है। बाये योद्धा के दोनों हस्त कटि पर हैं। इन्होंने घुटने तक पयजामा धारण किया है। इस भाग में चौखट में नीचे ज्यामितीय बनी है। गतिमान मुद्रा में एक योद्धा का अंकन है। इस योद्धा का मुह असाधारण रूप से बड़ा है।[7]

देवीथल, फटक्वालडुगरा में नौले के समीप बड़ा वीर स्तम्भ है तथा मंदिर के पास छोटा वीर स्तम्भ पाया गया है। नौले के समीप बड़े वीर स्तम्भ में ऊपरी दो भागों की कलाकृति सभी पार्शों के समान है। ग्रीवा भाग भी कला की दृष्टि से साधारण है। इस भाग में चौखट के नीचे ज्योमिती बनी है। द्वितीय पार्श्व का आमलकनुमा शीर्ष भाग के अपक्षरित होने के कारण पुष्प दल दृष्टिगोचर नहीं होता है। चतुर्थ भाग में चौखट के अंदर पूर्व की तरफ मुंह किये अश्व के ऊपर एक योद्धा बैठा है। जिसका सिर काफी दीर्घकाय है जो पट्टी को छूता है। इस भाग में चौखट के नीचे ज्यामिती बनी है। तृतीय पार्श्व में भग्न लिंगानुमा भाग एवं दीर्घ पुष्पदल युक्त आमलकनुमा है। ग्रीवा भाग तथा चतुर्थ भाग में ऊपर तथा नीचे ज्यामितीय डिजायनयुक्त गवाक्ष के अन्दर दाहिने हाथ में तलवार तथा उदर के आगे की गयी दीर्घ ढाल पकड़े गतिमान मुद्रा में एक योद्धा है।

मंदिर के समीप छोटा वीर स्तम्भ है जिसमें प्रथम भाग एवं द्वितीय भाग के सूक्ष्म पुष्पदल अपक्षरित होने से दृष्टिगोचर नहीं होते। तृतीय दलयुक्त ग्रीवा भाग तथा चतुर्थ साधारण आयताकार भाग जिसमें ऊपर दो योद्धा आयुध धारण किये गये स्थानक मुद्रा में तथा दो धावमान अश्वों का अंकन है। पंचम भाग तथा षष्ठ आधार भाग भूमि से लगा हुआ है। द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ पार्श्व के ऊपरी भाग समान है। द्वितीय पार्श्व के चतुर्थ आयताकार भाग में एक अश्वारोही दीर्घकाय योद्धा जिसके बायें हस्त में तलवार का अंकन है। पंचम भाग में एक योद्धा अपने दोनों हस्तों को ऊपर किये हुए, शक्ति का प्रदर्शन करते हुए स्नातक मुद्रा में है। षष्ठ आधार भाग युक्त पट्टी भूमि से लगी हैं। तृतीय पार्श्व का चतुर्थ, पंचम एवं षष्ठ भाग साधारण है। चतुर्थ पार्श्व के आयताकार चतुर्थ भाग में दीर्घकाय अश्व के पीठ पर एक लघु तथा एक दीर्घ योद्धा स्थानक मुद्रा में है। दीर्घकाय योद्धा अपने दाहिने हस्त से तलवार और बांये हस्त से पाषाण को ऊपर उठाये दृष्टिगोचर होता है।

4) विरखम, नामक स्थान, नौगांव, अल्मोड़ा–

वास्तव में वीर स्तम्भ के गोदाम होने के कारण ही इसका नाम वीरखम्भ पड़ा है। परन्तु वर्ममान में इस स्थान पर मात्र एक ही वीर स्तम्भ उपलब्ध है। वीर स्तम्भ नामक स्थान से दो वीर स्तम्भ, नौगांव के स्थानीय लोग उठा कर ले गये थे। वर्तमान में एक वीर स्तम्भ नौगांव मंदिर में स्थित है। यह मंदिर गोरखनाथ जी का है। स्थानीय व्यक्तियों के अनुसार दूसरा वीर स्तम्भ भी वीरखम्भ नामक स्थान से नौगांव के गधेरे में लाया गया था लेकिन प्राकृतिक आपदा के कारण जमीन बहने के कारण उक्त वीर स्तम्भ भी आपदा के भेंट चढ़ गया अर्थात बरसात में बह गया है।

यह वीर स्तम्भ मंदिर के किनारे पर स्थित है। मूल स्थान वीरखम्भ नामक स्थान से अनेक वीर स्तम्भ इधर–उधर स्थानीय व्यक्तियों द्वारा किये गये हैं। जहां पर वर्तमान में वीर स्तम्भ है तथा इसी वीर खम्भ के नाम पर इस स्थान का नाम वीरखम्भ पड़ा है। स्व0 श्री खड़क सिंह के खेत में वर्तमान में आधा ही वीर स्तम्भ है अर्थात वीर स्तम्भ क्षति ग्रस्त हो गया है।[8]

स्व. श्री खड़क सिंह कन्याल जी बहुयें श्रीमती मंजू देवी पत्नी श्री त्रिलोक सिंह तथा श्रीमती दीपा देवी पत्नी श्री पान सिंह कन्याल अपने जमीन (खेत) में मंडुवा तोड़ते हुए कह रही थी कि अब यहां पर केवल एक ही वीर स्तम्भ है। लोग बताते हैं कि यहां पर कई वीर स्तम्भ थे। इन वीर स्तम्भों का आकार भिन्न–भिन्न था।[9] प्रतीत होता है कि यहां वीर स्तम्भों का गोदाम था तथा इन स्तम्भों को चम्पावत से अल्मोड़ तक मुख्य मार्ग में लगाने के लिए वीरखम्भ नामक स्थान पर कुछ समय के लिए रखा गया लेकिन इसी समय कत्यूरी शासन का पतनोमुख होना आरम्भ हो गया तथा वीर स्तम्भों को मुख्य मार्ग पर लगाने की योजना बाधित हो गयी। इससे पूरी परियोजना रूक गयी तब से यह वीर स्तम्भ वीरखम्भ नामक स्थान पर ही रह गये। जनश्रुति के अनुसार वीर स्तम्भ नामक स्थान पर करीब 20–25 वीर स्तम्भ थे, लेकिन वर्तमान में वीरखम्भ नामक स्थान पर केवल एक ही वीर स्तम्भ है और वह भी क्षतिग्रस्त हो गया है। वीरखम्भ नामक स्थान से व्यक्तियों द्वारा वीर स्तम्भ को दूसरे स्थानों पर ले जाने की सूचना प्राप्त होती है। वीरखम्भ नामक स्थान से ही दो वीर स्तम्भ नौगांव में तथा तीन वीर स्तम्भ दयौव दाड़िमी में पहुंचने का आभास होता है। चूंकि वीरखम्भ नामक स्थान के वीर स्तम्भ कत्यूरी काल के हैं, इसलिए इन वीर स्तम्भों में कत्यूरी शासन काल की स्थापत्य कला है। कत्यूरी शासक इन वीर स्तम्भों का प्रयोग उनके द्वारा बनाये गये मंदिरों, नौलों, स्मारकों आदि में करते थे। प्रतीत होता है कि इन वीर स्तम्भों का प्रयोग कत्यूरी शासक स्थापत्य मुहर के रूप में करते थे तथा शासक इसे राजकीय निर्माणाधीन मंदिरों, नौलों, स्मारकों आदि में वीर स्तम्भ का प्रयोग करते थे। वीरखम्भ नामक स्थान पर पाये गये वीर स्तम्भ भी कत्यूरी शासकों ने राजकीय निर्माणाधीन मंदिरों, नौलो, स्मारकों, आदि के लिए बनवाये गये होंगे। क्योंकि शासकों के द्वारा बनाये गये मंदिरों, नौलों तथा स्मारकों में

अधिकतर स्थानों पर वीर स्तम्भ पाये गये हैं। कारण कुछ भी रहे हों, लेकिन इतना तो निश्चित है कि कत्यूरी शासन काल स्थापत्य कला में कुमाऊँ के अन्य शासकों से कई गुना आगे थे तथा कत्यूरी शासन काल में स्थापत्य कला अपने शिखर पर थी।[10]

5) द्यौव–दाड़िमी, अल्मोड़ा–

छ्यौव दाड़मी में तीन वीर स्तम्भ हैं। इनमें से दो वीर स्तम्भ ठीक–ठाक हालात में हैं। तीसरा वीर स्तम्भ जीर्ण–क्षीर्ण हालात में है। यह स्तम्भ आधा ही बचा है अर्थात इसका कुछ भाग नष्ट हो गया है।[11]

यह वीर स्तम्भ हमें श्री किशन सिंह बोरा पुत्र श्री धरम सिंह बोरा, दाड़मी के खेत के दीवार (भिड़) में मिला। इसमें उकेरे गये चित्र में देवी–देवता के युगल चित्र मिलता है। इसमें एक के हाथ में तलवार है तथा कत्यूरी शासकों की वीरता को दर्शाता है। वीर स्तम्भ चौकोर आकार का लम्बा पत्थर है तथा ऊपर से गोल छतनुमा बना है। स्तम्भ में चारों ओर से देवी–देवताओं के चित्र उकेरे गये हैं। हालांकि वीर स्तम्भ नीचे की तरफ से क्षतिग्रस्त है लेकिन ऊपर की तरफ सुरक्षित है और कत्यूरी स्थापत्य कला को दर्शाता है। इसके अलावा द्योव, दाड़मी अल्मोड़ा में ही दो वीर स्तम्भ श्री हर सिंह नेगी पुत्र श्री देव सिंह नेगी, ग्राम–सीम, के खेत के किनारे मुख्य मार्ग पर मिले हैं। इसमें से एक वीर स्तम्भ लगभग 6 फिट लम्बा है तथा चारों ओर से देवी–देवताओं के चित्र उकेरे गये हैं। देवी–देवताओं के युगल चित्र भी इसमें उकेरे गये हैं। दोनों ही वीर स्तम्भ श्री हर सिंह नेगी, ग्राम सीम की जमीन (खेत) में है तथा मुख्य मार्ग के किनारे पर स्थित है। एक वीर स्तम्भ लम्बा तथा दूसरा वीर स्तम्भ छोटा है। दोनों ही वीर स्तम्भ उत्तर दिशा की ओर झुके हुए है। समय के परिवर्तन तथा प्राकृतिक उतार–चढ़ाव तथा भूकम्प व अन्य कारणों से ये वीर स्तम्भ उत्तर दिशा की तरफ झुके प्रतीत होते हैं। द्यौव दाड़िमी में कुल तीन वीर स्तम्भ मिले हैं दो वीर स्तम्भ श्री हर सिंह नेगी जी के खेत में तथा एक वीर स्तम्भ श्री किशन सिंह बोरा जी की भूमि में मिला है। संरक्षण के अभाव के कारण यह वीर स्तम्भ जीण–क्षीर्ण अवस्था में है और इन वीर स्तम्भों को संरक्षण की अति आवश्यकता है। संरक्षण के अभाव में कत्यूरी शासकों की यह स्थापत्य कला तथा हमारी विरासत खतरे में है। अतः इसे संरक्षण की महती आवश्यकता है।[12]

i)दाड़िमी– सालम में द्योधार नामक तोक में तीन विरखम्भ उत्तर दिशा की ओर जाते हुए मार्ग के दायी तरफ खेत की मेढ़ पर है। जिसमें से एक विरखम्भ (123×27×9 सेमी0), जिसके ऊपरी दो भागों की कलाकृति सभी पार्श्वों में समान है। जो दीर्घ पुष्पदलयुक्त लिंगनुमा भाग संभवतः स्वयं को आमलकनुमा भाग में समायोजित किये हुए हैं या लघु लिंगनुमा भाग भग्न हो चुका है। ग्रीवा भाग भी कला की दृष्टि से साधारण है। चतुर्थ भाग में ऊपर तथा नीचे ज्यामितीय डिजायनयुक्त चौखट (28×23 सेमी0) के अंदर दो योद्धा के दाहिने हस्त में तलवार है। बाया हाथ कटि पर है। बायें योद्धा के दोनों हस्त कटि पर है। इन्होंने घुटने तक का आधा पायजामा धारण किया है। शेष वस्त्राभूषणों का अंकन दृष्टिगोचर नहीं होता है। विरखम्भ का पंचम (मध्य) भाग साधारण है। मेंढ़ पर लगे होने के कारण शेष द्वितीय तथा तृतीय पार्श्व भी दृष्टिगोचर नहीं होते है।[13] द्वितीय पार्श्व का आमलकनुमा शीर्ष भाग के अपक्षरित होने के कारण पुष्प दल दृष्टिगोचर नहीं होते। ग्रीवा भाग साधारण है। चतुर्थ भाग में चौखट के अन्दर पूर्व की तरफ मुह किये अश्व के ऊपर एक योद्धा बैठा है। जिसका सिर काफी दीर्घकाय है जो पट्टी को छूता है। जिसके दोनों हाथ एवं वस्त्राभूषणों का अंकन, अपक्षरण के कारण स्पष्ट नहीं है। इस भाग में चौखट में नीचे ज्यामितीय बनी है। पंचम मध्य भाग साधारण है। तृतीय पार्श्व में भग्न लिंगनुमा भाग एवं दीर्घ पुष्पदल युक्त आमलकनुमा (द्वितीय) है। ग्रीवा भाग (तृतीय) तथा चतुर्थ भाग में ऊपर तथा नीचे ज्योमितीय डिजायनयुक्त गवाक्ष के अन्दर दाहिने हस्त में तलवार तथा उदर के आगे की गयी दीर्घ ढाल पकड़े, गतिमान मुद्रा में एक योद्धा है। जिसके शेष वस्त्राभूषणों का अंकन नहीं है। पंचम भाग एवं उससे आगे का भाग मेढ़ से लगा होने से दृष्टिगोचर नहीं होता। चतुर्थ पार्श्व के द्वितीय भाग (दीर्घपुष्पदल युक्त आमलकनुमा शीर्ष भाग) साधारण ग्रीवा भाग (तृतीय) है तथा चतुर्थ आयताकार भाग में दो वृत्त हैं। पंचम भाग साधारण तथा षष्ठ आयताकार चौखट के भीतर क्षैतिजिय दण्ड पकड़े, गतिमान मुद्रा में एक योद्धा का अंकन है। इस योद्धा का मुह असाधारण रूप से बड़ा है। विरखम का यही भाग भूमि से लगा है।[14]

ii)दाड़िमी– यह विरखम (205×27×23 सेमी0) भी उपरोक्त विरखम के पास ही उत्तर की तरफ खेत (गड़) में खड़ा है। यह स्थान कोटेश्वर नदी के निकट है। जो नदी चम्पावत एवं अल्मोड़ा जनपद की सीमा है। यह स्तम्भ भी कत्यूरी शैली से भिन्न है। जिसमें प्रथम (सूक्ष्म लिंगनुमा) भाग एवं द्वितीय (आमलकनुमा शीर्ष) भाग के सूक्ष्म पुष्पदल अपक्षरित होने से दृष्टिगोचर नहीं होते। तृतीय दलयुक्त ग्रीवा भाग तथा चतुर्थ साधारण आयताकार भाग (37×20 सेमी) जिसमें ऊपर दो योद्धा आयुध धारण किये गये स्थानक मुद्रा में तथा दो धावमान अश्वों का अंकन है। पंचम मध्य भाग तथा षष्ठ आधार भाग भूमि से लगा है।[15]

द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ पार्श्व के ऊपरी तीन भाग समान है। द्वितीय पार्श्व के चतुर्थ आयताकार भाग में एक अश्वारोही दीर्घकाय योद्धा जिसके बायें हस्त में तलवार का अंकन है। बायें हस्त में कुछ धारण किया है। अश्व का अंकन पश्चिमाभिमुख है। इसके नीचे दो शिशु क्रमशः अपना बाया एवं दाया हाथ पकड़े क्रीडा करते हुए प्रतीत होते हैं। जिनके बालों में दो चोटी बनी प्रतीत होती है। पंचम भाग में एक योद्धा अपने दोनों हस्तों को ऊपर किये हुए, शक्ति का प्रदर्शन करते हुए स्थानक मुद्रा में है। षष्ठ आधार भाग युक्त पट्टी भूमि से लगी है। तृतीय पार्श्व का चतुर्थ, पंचम एवं षष्ठ भाग साधारण (रिक्त) है। चतुर्थ पार्श्व के आयताकार चतुर्थ भाग में दीर्घकाय पश्मिाभिमुख गतिमान अश्व के पीठ पर एक लघु तथा एक दीर्घ योद्धा स्थानक मुद्रा में है। दीर्घकाय योद्धा अपने दाहिने हस्त से तलवार और बांये हस्त से पाषाण को ऊपर उठाते हुए दृष्टिगोचर होता है। लघु योद्धा ने अपने दोनों हस्त ऊपर किये हैं। पंचम एवं षष्ट भाग साधारण हैं।[16]

पपपद्ध दाड़िमी– ग्राम सभा दाड़िमी, द्योधार नामक तोक में सीढ़ीनुमा खेत में तीन विरखम हैं। जिनमें से एक विरखम (78×24×2 सेमी0) जिसकी निर्माण शैली में कुछ भिन्नता है। इसके ऊपरी तीन भाग (लिंगनुमा– प्रथम भाग, आमलकनुमा–द्वितीय भाग, ग्रीवानुमा–तृतीय भाग) पूर्व स्तम्भों की भांति हैं। चतुर्थ भाग, मंदिर स्थापत्य की कत्यूरी या शिखर शैली के स्थान पर गवाक्ष या चैखट (26×15 सेमी0) है।[17] जिसमें दो अपक्षरित एवं मानव आकृतियाँ स्थानक मुद्रा में हैं। जो एक दूसरे से सटे हुए है। जिन्होंने वायां हस्त कटि पर रखा है। इस स्तम्भ में पांचवा भाग पट्टी न होकर आधार तथा अन्तिम भाग जो भूमि से लगा है। द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ पार्श्व के ऊपरी तीन भाग समान हैं। चतुर्थ भाग में ऊपर ज्यामितीय डिजायन–युक्त पट्टी के नीचे संभवतः अश्वारोही या गजारोही योद्धा है। जिसके दाहिने हस्त में तलवार तथा बाये हस्त उस पशु के ऊपर रखा हुआ प्रतीत होता है। अपक्षरण के कारण योद्धा के वस्त्राभूषणों का स्पष्ट अंकन दृष्टिगोचर नहीं

होता है। इससे नीचे का भाग भग्न है। तृतीय पार्श्व के चतुर्थ भाग में दो साधारण वृत्त हैं।

पंचम भाग साधारण तथा भूमि को स्पर्श करता है। चतुर्थ पार्श्व के चतुर्थ भाग में ऊपर तथा नीचे ज्योमितीय डिजायन युक्त चौखट के भीतर एक धावमान हृष्ट–पुष्ट योद्धा है। जिसका उदर असाधारण या असन्तुलित है या पूर्व की भांति यह ढाल भी हो सकती है। हस्त खंण्डित या अपक्षरित भी हो सकते हैं। इनके वस्त्राभूषणों का अंकन नहीं है। पंचम भाग, साधारण, अन्तिम तथा आधार भाग है जो भूमि से लगा है।[18]

6) भूमिया मन्दिर के निकट ग्राम–बष्ट, अल्मोड़ा–

सालम क्षेत्र के ग्राम– वष्ट में मंदिर के पास एक वीर स्तम्भ है यह मंदिर के सामने स्थित है। इसके चारों ओर कत्यूरी कालीन चित्र उकेरे गये हैं। कु0 जान्हवी जो कि दिल्ली विश्वविद्यालय की बी0ए0 की छात्रा है। उन्होंने बताया कि यह वीर स्तम्भ कत्यूरी काल का है तथा प्राचीन है। ग्राम वष्ट का वीर स्तम्भ लम्बा तथा चौकोर है। उसके ऊपर गोल पत्थर की धारियां हैं तथा सबसे ऊपर छोटा गुम्बदनुमा आकार है। कत्यूरी कालीन यह वीर स्तम्भ ग्राम–वष्ट में भूमिया मंदिर के सामने पूरब की ओर स्थित है। वीर स्तम्भ लम्बा तथा पूर्ण रूप से सुरक्षित रखा गया है। वीर स्तम्भ के चारों कोने में शिव, गणेश, पार्वती आदि के चित्र उकेरे गये हैं। तथा स्तम्भ के शीर्ष में सूर्य देवता का चित्र प्रतीत होता है।[19]

ग्राम–वष्ट में मंदिर में स्थित यह वीर स्तम्भ प्रांगन में स्थित होने के कारण इसके दर्शन दूर से ही हो जाते हैं। मंदिर में अन्य मूर्तियों के समान इस इस वीर स्तम्भ की पूजा , पूजारियों द्वारा की जाती है। तथा इसमें जल, चन्दन, अक्षत फूल तथा फलों का चढ़ावा चढ़ाया जाता है। यह वीर स्तम्भ कई सालों से धूप, वारिस तथा शीत लहरों को झेलते हुए खड़ा है। तथा इसमें उकेरे गये चित्र साफ देखे जा सकते हैं। इसमें विभिन्न देवी–देवताओं के चित्रों में वस्त्राभूषणों का अकन होता है। इसमें ज्योमितीय डिजायन युक्त पट्टी के नीचे संभवतः अश्वरोही अथवा गजारोही योद्धा का चित्र है। भूमिया मंन्दिर पर स्थित होने के कारण इस वीर स्तम्भ को भूमिया देवता का सलाहकार माना जाता है। भूमिया देवता के साथ–साथ इस वीर स्तम्भ की भी पूजा अर्चना की जाती है। इस वीर स्तम्भ को कत्यूरी काल का माना जा सकता है। कत्यूरियों के समय में वीर स्तम्भों का काफी प्रचलन था तथा उन्होंने मंदिरों, नौलों, राजकीय स्मारकों आदि में वीर स्तम्भों को रखने का प्रचलन किया था।

7) द्वयारी नौला के निकट, मल्ला विनौला, अल्मोड़ा–

सालम क्षेत्र में स्थित ग्राम–मल्ला विनौला के पूर्व की तरफ स्थित द्वयारी नौले के पास एक वीर स्तम्भ है। यह वीर स्तम्भ सालम क्षेत्र में मिले अन्य वीर स्तम्भों से काफी वजनदार है। इस वीर स्तम्भ में भी चारों ओर से चित्र उकेरे गये हैं। यह चित्र देवी–देवताओं से सम्बन्धित है। कत्यूरी शासकों ने जिस नौले को राजकीय कोषागार के खर्च से बनवाया था उसके पास एक वीर स्तम्भ भी रखवाया गया ताकि यह प्रदर्शित हो सके कि उक्त नौले को राजकीय संरक्षण प्राप्त है। मल्ला विनौला में नौले के पास स्थित वीर स्तम्भ इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस वीर स्तम्भ में कत्यूरी कालीन स्थापत्य कला उकेरी गयी है।

इस वीर स्तम्भ के चारों दिशाओं में चित्र उकेरे गये हैं। इनमें हनुमान, शिव, पार्वती आदि के चित्र प्रतीत होते हैं। इस वीर स्तम्भ के शीर्ष में सूर्य भगवान का चित्र भी है। सालम क्षेत्र में पाये गये वीर स्तम्भों में सबसे ज्यादा चौड़ा तथा वजनदार यह विनौला ग्राम सभा का वीर स्तम्भ है।[20]

विनोला के पास, नौले में जो वीर स्तम्भ प्राप्त होता है उसमें हनुमान जी का चित्र प्रतीत होता है जो हाथ में गदा धारण किये है तथा सूर्य देवता को नमन करते हुए मुद्रा में है। इसमें हमें उक्त समय के सूर्य पूजा–अर्चना का आभास होता है। सूर्य पूजा को राजपूत काल में विशेष रूप से स्थान दिया गया है। नागर शैली में भी शिखर पर ''केलाधड़ी'' के होने से सूर्य के चक्र का आभास होता है तथा सूर्य पूजा को बल मिलता है। इसके अलावा अन्य मूर्तियां भी भक्ति की ओर संकेत करते हैं। वीर स्तम्भ के चारों ओर से चित्र उकेरे गये हैं तथा प्रत्येक की अपनी अलग–अलग महत्ता है। परम्परा है कि गांव में जब भी नये जोड़े की शादी होती है तो उनके मुकुट इस नौले में शिवाये जाते हैं। तथा वीर स्तम्भ से आशीर्वाद लिया जाता है। इस वीर स्तम्भ को भगवान का रूप माना जाता है तथा जल से इसे नहलाया जाता है।

Volume - 6 | Issue - 10 | November - 2016

सालम क्षेत्र में स्थित प्रमुख वीर स्तम्भ

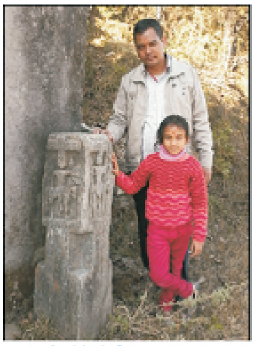

ड्यारी नौले के निकट, ग्राम– मल्ला बिनौला (अल्मोड़ा)

भूमिया मन्दिर के निकट, ग्राम– बष्ट (अल्मोड़ा)

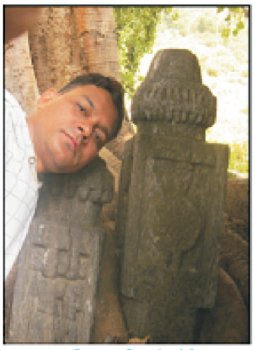

मानबिलाव मन्दिर में (सेरी) ग्राम– झालडुंगरा (अल्मोड़ा)

द्यौव–दाड़मी, ग्राम– दाड़िमी (अल्मोड़ा)

सालम क्षेत्र में स्थित प्रमुख वीर स्तम्भ

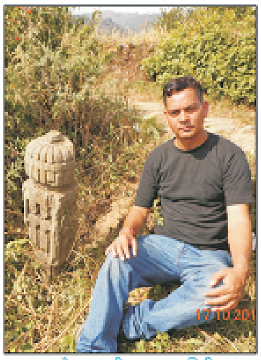

द्यौव–दाड़मी, ग्राम– दाड़िमी (अल्मोड़ा)

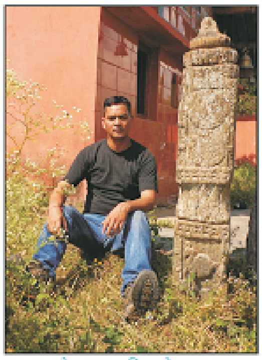

गोरखनाथ मन्दिर के पास, ग्राम– नौगाँव (अल्मोड़ा)

बिरखम नामक स्थान– बिरखम (अल्मोड़ा)

ड्यारी नौले के निकट, ग्राम– मल्ला बिनौला (अल्मोड़ा)

Volume - 6 | Issue - 10 | November - 2016

सालम क्षेत्र में स्थित प्रमुख वीर स्तम्भ एवं उडियार

द्यौष–दाड़मी, ग्राम– दाड़िमी (अल्मोड़ा)

बधौरा के निकट, ग्राम– त्यूनरा (अल्मोड़ा)

माटक उडियार, नया संग्रौली (अल्मोड़ा)

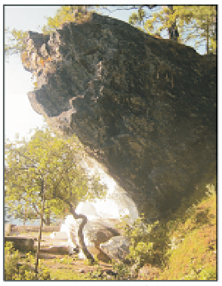

भवानी उडियार, धुर्का देवी (अल्मोड़ा)

सन्दर्भ सूची

1.खरकवाल, जीवन सिंह, 138, बी,शक्तिनगर, उदयपुर, राजस्थान, रामसिंह धौनी स्मारिका, प्रकाशन वर्ष–1999, प्रकाशक– श्री हयात सिंह रावत, अल्मोड़ा, पृ0सं0– 174

2.उपरोक्त, पृ0सं0– 174

3.बगड़वाल, गोविन्द सिंह, ग्राम व पोस्ट– झालडुगरा, राम सिंह धौनी स्मारिक प्रकाशन वर्ष– 1999 अल्मोड़ा, सम्पादक– हयात सिंह रावत, इन्द्र सदन, सुनारी नौला, मु0– तिलकनगर, अल्मोड़ा, पृ0सं0– 156

4.नेगी, भवान सिंह पुत्र श्री मोहन सिंह नेगी से साक्षात्कार पर आधारित दिनांक 18 अक्टूबर 2013, त्यूनरा, अल्मोड़ा, सालम, उत्तरखण्ड

5.नेगी कुंवर सिंह से साक्षात्कार पर आधारित दिनांक 18 अक्टूबर 2013, त्यूनरा, अल्मोड़ा, सालम, उत्तरखण्ड।

6.उपरोक्त, दिनांक 18 अक्टूबर 2013

7.भण्डारी, पूरन सिंह, ग्राम– मल्ला विनौला, पो0ऑ0– जयन्ती, जिला– अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड (साक्षात्कार पर आधारित दिनांक 22 अक्टूबर 2013)

8.मंजू देवी पत्नी श्री त्रिलोक सिंह एंव श्रीमती दीपा देवी पत्नी श्री पान सिंह कनयाल, साक्षात्कार पर आधारित दिनांक 17 अक्टूबर 2013

9.उपरोक्त, दिनांक 17 अक्टूबर 2013

10.उपरोक्त, दिनांक 17 अक्टूबर 2013

11.बोरा, हर सिंह, ग्राम– दाड़िमी, पो0ऑ0– जयन्ती, जिला – अल्मोड़ा, सालम, उत्तराखण्ड (साक्षात्कार पर आधारित, दिनांक 18 अक्टूबर 2013)

12.उपरोक्त, दिनांक 18 अक्टूबर 2013

13.नियोलिया, शीला, निदेशक,– श्री अजय सिंह रावत (इतिहास विभाग), कुमाऊँ के वीर स्तम्भ– 1999 (उससे सम्बद्ध पारम्परिक स्मारक– एक ऐतिहासिक एवं कलात्मक अध्ययन) 1999 (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध), पृ0सं0– 132

14.उपरोक्त, पृ0सं0– 133

15.उपरोक्त, पृ0सं0– 133

16.उपरोक्त, पृ0सं0– 134

17.उपरोक्त, पृ0सं0– 134

18.उपरोक्त, पृ0सं0– 135

19.जान्हवी (दिल्ली विश्वविद्यालय), ग्राम–बष्ट, पो0ऑ0– जयन्ती, जिला–अल्मोड़ा, सालम, उत्तराखण्ड (साक्षात्कार पर आधारित दिनांक 18 अक्टूबर 2013)

20.भण्डारी, पूरन सिंह, ग्राम– मल्ला विनौला (वाजधार), पो0ऑ0– जयन्ती, जिला–अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड (साक्षात्कार पर आधारित दिनांक 22अक्टूबर 2013)

Shailesh Bhandari
Assistant Professor – (History), Chanakya Law College, Rudrapur, US Nagar (Uttrakhand) India .

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org